


---

# Sanskritam Lokaranjakam

——  
संस्कृतं लोकरञ्जकम्

——  
Document Information



---

Text title : Sanskritam Lokaranjakam

File name : saMskRRitamlokaranjakam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : muthalapuraM mohanadAsa

Acknowledge-Permission: Muthalapuram Mohanadasa muthalapurammohandas [at] gmail.com

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 12, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



संस्कृतं लोकरञ्जकम्



जयतु भारतं विश्वमोहनं  
नमतु सादरे भारताम्बिकाम् ।  
भजतु संस्कृतं वेदमातरं  
पठतु संस्कृतं लोकरञ्जकम् ॥

सद्गुणदृश्यते मातृवत् सदा  
छितकरी दिशं दिशति संस्कृतम् ।  
पठतु संस्कृतं ज्ञानलब्धये  
विनयमाप्नुयात् विश्वभाषया ॥

यद्विदुः विद्यते तद्भवेल्लव्यित्  
यद्विदुः नासते नास्ति तत् क्वचित् ।  
अतिमहत्तरमस्य वैभवं  
अतुलमक्षयं भजत संस्कृतम् ॥ ३ ॥


छितोपदेशकैर्सुभाषितैर्युतं  
दृष्टयञ्जकैः काव्यतल्लजैः ।  
विपुलवैभवं शास्त्रसम्मितं  
संस्कृतं सदा मोदायकम् ॥ ४ ॥

भुवि कदापि न क्षरति संस्कृतं  
अमृतशोषणं कथं भविष्यति? ।  
त्यजतु संशयं भजतु प्रत्ययं  
पठतु संस्कृतं स्वास्थ्यमाप्नुयात् ॥ ५ ॥

- मुथलपुरं मोहनदास

——  
*SanskritaM Lokaranjakam*

pdf was typeset on August 12, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

